7

प्रत्यय

(क्त, क्तवतु, क्तिन्, क्त्वा, ल्यप्, शतृ, शानच्, तुमुन्, मतुप्, ठक्, त्व, तल्, टाप्, अनीयर्, इन्)

संस्कृत में किसी एक शब्द से अनेक शब्द बनाने की साधारण रीति है। धातुओं, संज्ञाओं, सर्वनामों, विशेषणों के आगे प्रत्यय जोड़ने से असंख्य शब्द बन जाते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं–

(1) कृत् प्रत्यय (2) तद्धित प्रत्यय।

कृत् प्रत्यय साधारणत: धातुओं में जोड़े जाते हैं और तद्धित प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण में लगाये जाते हैं।

1. कृत् (कृदन्त) प्रत्यय

कृत् प्रत्यय धातुओं में जोड़े जाते हैं और इनसे बने पद को कृदन्त कहते हैं। कृत् प्रत्यय के योग से जो शब्द बनते हैं, उन्हें तीन कोटियों में विभाजित किया जा सकता है– अव्यय, विशेषण और संज्ञा।

कृत् प्रत्यय के भेद– इस प्रत्यय के निम्न भेद हैं–

(अ) क्त्वा प्रत्यय– जब एक ही कर्त्ता द्वारा एक कार्य की समाप्ति के बाद दूसरी क्रिया की जाती है, तो क्त्वा प्रत्यय का प्रयोग होता है। इस प्रत्यय के योग से बने हुए शब्द को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं, क्योंकि वे प्रधान क्रिया से पहले हुई क्रिया को द्योतित करते हैं। **यथा–** राम: पठित्वा गृहं गच्छति। (राम पढ़कर घर जाता है।) इसमें राम दो कार्य करता है– (1) पढ़ता है, (2) घर जाता है। इन दो क्रियाओं में पढ़ने की क्रिया जो पठित्वा से प्रकट होती है, पूर्वकाल में हुई है, अत: पठित्वा को पूर्वकालिक क्रिया कहेंगे।

क्त्वा प्रत्यय धातुओं के बाद लगता है तथा इसका केवल 'त्वा' शेष रहता है। कुछ धातुओं में केवल 'त्वा' और कुछ में केवल 'इत्वा' लगता है। **यथा–**

धातु + प्रत्यय	**क्त्वान्त रूप**		**अर्थ**
कृ + क्त्वा	कृत्वा	**(2019AU)**	करके
दा + क्त्वा	दत्वा		देकर
पा + क्त्वा	पीत्वा	**(2020MU)**	पीकर
गम् + क्त्वा	गत्वा		जाकर
हस् + क्त्वा	हसित्वा	**(2020MR)**	हँसकर
जि + क्त्वा	जित्वा		जीतकर
स्था + क्त्वा	स्थित्वा		ठहरकर
श्रु + क्त्वा	श्रुत्वा	**(2019AO, AQ)**	सुनकर
ज्ञा + क्त्वा	ज्ञात्वा	**(2020MQ)**	जानकर
पत् + क्त्वा	पतित्वा		गिरकर
स्ना + क्त्वा	स्नात्वा		स्नानकर
दृश् + क्त्वा	दृष्ट्वा		देखकर

(आ) ल्यप् प्रत्यय– पूर्वकालिक क्रिया बनाने के लिए धातुओं में क्त्वा जोड़ते हैं, पर यदि धातुओं के पहले उपसर्ग आदि अव्यय समस्त हों तो क्त्वा का ल्यप् (समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वो ल्यप्) हो जाता है। ल्यप् का 'य' अथवा 'त्य' शेष रह जाता है।

यहाँ ल्यप् प्रत्यय के योग से बने हुए कुछ शब्द दिये जा रहे हैं–

उपसर्ग	**धातु**	**प्रत्ययान्त रूप**
अनु	भू	अनुभूय **(2020MQ)**
आ	गम्	आगम्य
वि	नी	विनीय
आ	प्रच्छ्	आपृच्छ्य
प्र	कृ	प्रकृत्य
प्र	आप्	प्राप्य
वि	चि	विचित्य
वि	रम्	विरत्य, विरम्य
प्र	नम्	प्रणत्य, प्रणम्य
उत्	तृ	उत्तीर्य

(इ) क्त प्रत्यय– क्त प्रत्यय को मूल धातु से जोड़ने पर कृदन्त रूप भूतकाल का अर्थ देता है। इस प्रत्यय का 'त' शेष रहता है।

जैसे– मैंने पुस्तक पढ़ी।	मया पुस्तकम् पठितम्।
तुमने चित्र देखा।	त्वया चित्रम् दृष्टम्।
राम ने पत्र लिखा।	रामेण पत्रम् लिखितम्।
तुम्हारा भेजा हुआ पत्र मिला।	त्वया प्रेषितम् पत्रम् प्राप्तम्।
मेरा लिखा हुआ निबन्ध यह है।	मया लिखित: निबन्ध: अयम् अस्ति।

टिप्पणी– 'क्त' प्रत्यय का प्रयोग कर्मवाच्य तथा भाववाच्य क्रियाओं में होता है, अत: ऐसी स्थिति में कर्त्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा तथा क्रिया के लिङ्ग, वचन, कर्म के अनुसार होते हैं। अकर्मक क्रियाओं में कर्त्ता में तृतीया तथा क्रिया नपुंसकलिङ्ग एकवचन होता है। 'क्त' प्रत्यय से बने हुए कुछ शब्द निम्नवत् हैं–

गम् + क्त = गत **(2019AP, AS, 20MS)**	पृच्छ + क्त = पृष्ट
कृ + क्त = कृत	लिख + क्त = लिखित
पठ् + क्त = पठित	कथ + क्त = कथित

'क्त' प्रत्यय का प्रयोग जब भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है, तब क्त प्रत्ययान्त शब्द में विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति लगते हैं। **जैसे–**

1. गुरुओं द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलो।	गुरुभि: उपदिष्टे मार्गे चलत।
2. मेरे द्वारा कही गई बात को स्मरण करो।	मया कथितम् वचनम् स्मर।
3. सोये हुए बालक को देखो।	सुप्तम् बालकम् पश्य।

उपर्युक्त वाक्यों में कथितम्, सुप्तम् आदि शब्द 'क्त' प्रत्यय से बने हैं और विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुए हैं, अत: इनमें विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन तथा विभक्ति का प्रयोग हुआ है।

कुछ आवश्यक धातुओं के क्त प्रत्ययान्त रूप–

कम्प्	इ	क्त	कम्पित:	काँप गया।
अधि	इ	क्त	अधीत:	पढ़ा गया।
चिन्त्	इ	क्त	चिन्तित:	चिन्तित हुआ।
आ	हु	क्त	आहूत:	बुलाया गया।
ज्वल्	इ	क्त	ज्वलित:	जल गया।
जि		क्त	जित:	जीता गया।
पूज्	इ	क्त	पूजित:	पूजा गया।
विद्	इ	क्त	विदित:	ज्ञात हुआ।
नश्		क्त	नष्ट: **(2019AT)**	मिट गया।
शक्		क्त	शक्त:	समर्थ हुआ।
पा		क्त	पीत: **(2020MP)**	पिया गया।
शिक्ष्	इ	क्त	शिक्षित:	सिखाया।
भू		क्त	भूत:	हुआ।
शोभ्	इ	क्त	शोभित:	सुशोभित हुआ।
जीव्		क्त	जीवित:	जी उठा।
प्रविश्		क्त	प्रविष्ट:	प्रवेश किया।
भाष्		क्त	भाषित:	कहा गया।
मिल्		क्त	मिलित:	मिला हुआ।
रुच्		क्त	रुचित:	अच्छा लगा।

(ई) क्तवतु प्रत्यय–क्तवतु प्रत्यय का प्रयोग भूतकालिक क्रिया और भूतकालिक विशेषण के रूप में होता है।

जैसे– बालक: पुस्तकम् पठितवान्। बालक ने पुस्तक पढ़ी।
रमा गृहम् गतवती। रमा घर गयी।
छात्रा: निबन्धम् लिखितवन्त: छात्रों ने निबन्ध लिखा।
स: ग्रामं गतवान्। वह ग्राम को गया।
अहं भोजनम् भुक्तवान्। मैंने भोजन किया।

उपर्युक्त वाक्यों से ज्ञात होता है कि 'क्तवतु' प्रत्यय लगाकर भूतकालिक क्रिया के अर्थ में प्रयुक्त शब्द कर्तृवाच्य होते हैं, अत: कर्त्ता के अनुसार ही 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्द में लिङ्ग और वचन का प्रयोग होता है। अत: 'क्तवतु' प्रत्यय से बने शब्दों के रूप तीनों लिङ्गों में निम्नवत् चलते हैं। कृ + क्तवतु = कृतवत्।

पुंलिङ्ग

एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
कृतवान्	कृतवन्तौ	कृतवन्त:

स्त्रीलिङ्ग

कृतवती	कृतवत्यौ	कृतवत्य:

नपुंसकलिङ्ग

कृतवत्	कृतवती	कृतवन्ति

टिप्पणी– कृ धातु और 'क्तवतु' प्रत्यय से बने हुए शब्द पुंलिङ्ग में भवत् शब्द के समान और स्त्रीलिङ्ग में नदी शब्द के समान चलते हैं। नपुंसकलिङ्ग में तृतीया विभक्ति से सप्तमी विभक्ति तक के रूप पुंलिङ्ग के समान होते हैं।

कतिपय धातुओं के 'क्तवतु' प्रत्यय से बने हुए शब्द –

धातु	अर्थ	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
गम्	जाना	गतवान्	गतवती	गतवत्
भू	होना	भूतवान्	भूतवती	भूतवत्
श्रु	सुनना	श्रुतवान्	श्रुतवती	श्रुतवत्
पूज्	पूजा करना	पूजितवान्	पूजितवती	पूजितवत्
लिख्	लिखना	लिखितवान्	लिखितवती	लिखितवत्
ज्ञा	जानना	ज्ञातवान्	ज्ञातवती	ज्ञातवत्
अर्च	पूजा करना	अर्चितवान्	अर्चितवती	अर्चितवत्
आ + दिश्	आज्ञा देना	आदिष्टवान्	आदिष्टवती	आदिष्टवत्
आप्	प्राप्त करना	आप्तवान्	आप्तवती	आप्तवत्
आ + रूह्	चढ़ना	आरूढ़वान्	आरूढ़वती	आरूढ़वत्
उप + विश्	बैठना	उपविष्टवान्	उपविष्टवती	उपविष्टवत्
कथ्	कहना	कथितवान्	कथितवती	कथितवत्
क्री	खरीदना	क्रीतवान्	क्रीतवती	क्रीतवत्
पत्	गिरना	पतितवान्	पतितवती	पतितवत्
त्यज्	छोड़ना	त्यक्तवान्	त्यक्तवती	त्यक्तवत्
लभ्	पाना	लब्धवान्	लब्धवती	लब्धवत्
सृज्	सृष्टि करना	सृष्टवान्	सृष्टवती	सृष्टवत्

(ङ) शतृ, शानच् प्रत्यय

1. गुरु शिष्य को बढ़ता हुआ देखना चाहता है।
   गुरुः शिष्यं वर्धमानं द्रष्टुम् इच्छति।
2. सूर्योदय होने पर सोता न रहे।
   सूर्योदये जाते शयानः न स्यात्।
3. लक्ष्मी परिश्रम करने वाले के पास जाती है।
   लक्ष्मीः परिश्रमं कुर्वाणम् उपगच्छति।
4. यह बैठी हुई महिला क्या करेगी?
   इयं उपविशन्ती महिला किं करिष्यति?
5. कार्य करती हुई स्त्री को देखो।
   कार्यं कुर्वन्ती महिलां पश्य।

जब एक कार्य को करते हुए दूसरी क्रिया होती है, तब 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों का प्रयोग होता है। परस्मैपदी धातुओं से शतृ (अत्) प्रत्यय और आत्मनेपदी धातुओं से शानच् (आन्) प्रत्यय होते हैं, **जैसे–**

पठ् + शतृ (अत्) पठत्।
शी + शानच् (आन्) शयान्।

शतृ, शानच् प्रत्ययों से बने हुए शब्दों का प्रयोग विशेषण के रूप में होता है, अत: इनमें विशेष्य की भाँति लिङ्ग, वचन, विभक्ति का प्रयोग होता है, **जैसे–**

1. बालक: हसन् क्रीडति।	बालक हँसता हुआ खेलता है।
2. बालकौ हसन्तौ क्रीडत:।	दो बालक हँसते हुए खेलते हैं।
3. बालका: हसन्त: क्रीडन्ति।	बच्चे हँसते हुए खेलते हैं।
4. बालिका हसन्ती क्रीडति।	बालिका हँसती हुई खेलती है।
5. बालिके हसन्त्यौ क्रीडत:।	दो बालिकाएँ हँसती हुई खेलती हैं।
6. बालिका: हसन्त्य: क्रीडन्ति।	सभी बालिकाएँ हँसती हुई खेलती हैं।

टिप्पणी– 'शतृ' प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुंलिङ्ग में **भगवत्** शब्द की भाँति चलते हैं, स्त्रीलिङ्ग में **नदी** की भाँति तथा नपुंसकलिङ्ग में **जगत्** की भाँति चलते हैं। 'शानच्' प्रत्यय आत्मनेपदी धातुओं से होता है और इनके रूप पुंलिङ्ग में **बालक** की तरह, स्त्रीलिङ्ग में **बालिका** की तरह तथा नपुंसकलिङ्ग में **फल** की तरह चलते हैं।

कतिपय धातुओं के 'शतृ' और 'शानच्' प्रत्ययों से बने हुए पुंलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग के रूप निम्नवत् हैं–

शतृ प्रत्ययान्त से बने हुए रूप

धातु	अर्थ	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पठ्	पढ़ना	पठन् **(2020MT)**	पठन्ती	पठत्
लिख्	लिखना	लिखन्	लिखन्ती	लिखत्
क्रीड्	खेलना	क्रीडन्	क्रीडन्ती	क्रीडत्
धाव्	दौड़ना	धावन्	धावन्ती	धावत्
कृ	करना	कुर्वन्	कुर्वन्ती	कुर्वत्
आप्	पाना	आप्नुवन्	आप्नुवन्ती	आप्नुवन्तीत्
श्रु	सुनना	शृण्वन्	शृण्वन्ती	शृण्वत्
गम्	जाना	गच्छन्	गच्छन्ती	गच्छत्
गर्ज्	गरजना	गर्जन्	गर्जन्ती	गर्जत्
दृश्	देखना	पश्यन्	पश्यन्ती	पश्यत्
अर्च	पूजना	अर्चन्	अर्चन्ती	अर्चत्
कथ्	कहना	कथयन्	कथयन्ती	कथयत्
क्री	खरीदना	क्रीणन्	क्रीणन्ती	क्रीणत्
गै	गाना	गायन्	गायन्ती	गायत्
छिद्	काटना	छिन्दन्	छिन्दन्ती	छिन्दत्
शक्	सकना	शक्नुवन्	शक्नुवन्ती	शक्नुवत्
स्वप्	सोना	स्वपन्	स्वपन्ती	स्वपत्
स्मृ	याद करना	स्मरन्	स्मरन्ती	स्मरत्
हृ	हरण करना	हरन्	हरन्ती	हरत्

शानच् प्रत्ययान्त से बने हुए रूप

धातु	अर्थ	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
वृध्	बढ़ना	वर्धमान:	वर्धमाना	वर्धमानम्
वृत्	होना	वर्तमान:	वर्तमाना	वर्तमानम्
याच्	माँगना	याचमान:	याचमाना	याचमानम्
शी	सोना	शयान:	शयाना	शयानम्
कम्प्	काँपना	कम्पमान:	कम्पमाना	कम्पमानम्
आस्	बैठना	आसीन:	आसीना	आसीनम्
जन्	पैदा होना	जायमान:	जायमाना	जायमानम्
त्वर्	जल्दी करना	त्वरमाण:	त्वरमाणा	त्वरमाणम्
लभ्	पाना	लभमान:	लभमाना	लभमानम्
सेव्	सेवा करना	सेवमान:	सेवमाना	सेवमानम्
सह्	सहन करना	सहमान:	सहमाना	सहमानम्।

(ऊ) तुमुन् प्रत्यय–इस प्रत्यय के योग से जो अव्यय पद बनते हैं, उनका अर्थ धातु के अर्थ के साथ 'के लिए' जोड़ देने पर निकलता है। **जैसे–** गम् धातु का अर्थ है जाना। इसमें तुमुन् जोड़ने से गन्तुम् बना, जिसका अर्थ है जाने के लिए।

इस प्रत्ययान्त पदों से उस क्रिया का ज्ञान होता है, जिसे करने के लिए प्रधान क्रिया कर्त्ता के द्वारा सम्पादित की जाती है। राम: पठितुं गच्छति। इसका अर्थ है– राम पढ़ने के लिए जाता है। प्रधान क्रिया 'जाता है' का उद्देश्य पढ़ना है। 'पढ़ने के लिए' प्रकट करने के लिए पठ् + तुमुन् = पठितुं बना। क्त्वा की भाँति तुमुन् प्रत्ययान्त क्रिया का कर्त्ता भी प्रधान क्रिया का कर्त्ता ही होता है।

तुमुन् प्रत्ययान्त के कुछ पदों के रूप नीचे दिये गये हैं–

धातु	तुमुनान्त शब्द	अर्थ
भू	भवितुम्	होने के लिए
पा	पातुम् **(2019AP, 20MQ)**	पीने के लिए
गम्	गन्तुम् **(2020MO, MR, MU)**	जाने के लिए
स्ना	स्नातुम्	स्नान करने के लिए
गा	गातुम्	गाने के लिए
खाद्	खादितुम्	खाने के लिए
कीड्	क्रीडितुम्	खेलने के लिए
दृश्	द्रष्टुम्	देखने के लिए
दा	दातुम् **(2020MS)**	देने के लिए
वन्द	वन्दितुम्	वन्दना करने के लिए

(ऋ) क्तिन् प्रत्यय–धातुओं में क्तिन् प्रत्यय जोड़ने पर भाववाचक स्त्रीलिङ्ग शब्द बनते हैं। क्त प्रत्ययान्त शब्दों के अन्तिम अ के स्थान पर 'इ' कर देने से क्तिन् प्रत्ययान्त शब्द बन जाते हैं। **यथा–**

मन्	+	क्तिन्	=	मति।
गै	+	क्तिन्	=	गीति।
पुष्	+	क्तिन्	=	पुष्टि।
बुध्	+	क्तिन्	=	बुद्धि।
कृ	+	क्तिन्	=	कृति।
श्रु	+	क्तिन्	=	श्रुति।
स्तु	+	क्तिन्	=	स्तुति।
गम्	+	क्तिन्	=	गति।

(ए) अनीयर् प्रत्यय—अनीयर् प्रत्यय का प्रयोग 'चाहिए' के अर्थ में किया जाता है। अनीयर् का 'अनीय' शेष रहता है। इसका प्रयोग सकर्मक धातु से कर्मवाच्य में तथा अकर्मक धातु से भाव वाच्य में होता है। कर्मवाच्य के कर्त्ता में तृतीया तथा कर्म में प्रथमा होती है। क्रिया का लिङ्ग एवं वचन कर्म के अनुसार होता है। भाववाच्य के कर्त्ता में तृतीया तथा क्रिया नपुंसकलिङ्ग एकवचन में होती है। रूप तीनों लिङ्गों में होते हैं।

अनीयर् प्रत्यय के योग से बने हुए रूप

धातु	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
गम्	गमनीय:	गमनीया	गमनीयम्
कृ	करणीय:	करणीया	करणीयम्
पठ्	पठनीय: **(2019AP)**	पठनीया	पठनीयम्
भू	भवनीय:	भवनीया	भवनीयम्
लिख्	लेखनीय:	लेखनीया	लेखनीयम् **(2020MO)**
श्रु	श्रवणीय:	श्रवणीया	श्रवणीयम्
पा	पानीय:	पानीया	पानीयम्
कथ्	कथनीय:	कथनीया	कथनीयम्
दृश्	दशनीय:	दर्शनीयां	दर्शनीयम्

कृदन्त प्रत्यय बोधक चक्र

धातु	अर्थ	क्त्वा	ल्यप्	क्त	क्तवतु	शतृ	शानच्	तुमुन्
कृ	करना	कृत्वा	उपकृत्य	कृत:	कृतवान्	कुर्वन्	कुर्वाण:	कर्तुम्
पठ्	पढ़ना	पठित्वा (2020MO)	प्रपठ्य	पठित:	पठितवान्	पठन्	पठ्यमान:	पठितुम्
गम्	जाना	गत्वा	आगत्य	गत:	गतवान्	गच्छन्	गम्यमान:	गन्तुम्
भू	होना	भूत्वा	सम्भूय	भूत:	भूतवान्	भवन्	भूयमान:	भवितुम्
ज्ञा	जानना	ज्ञात्वा	विज्ञाय	ज्ञात:	ज्ञातवान्	जानन्	ज्ञायमान:	ज्ञातुम्
पा	पीना	पीत्वा	आपीय	पीत:	पीतवान्	पिबन्	पीयमान:	पातुम्
श्रु	सुनना	श्रुत्वा	अनुश्रूय	श्रुत:	श्रुतवान्	शृण्वन्	श्रूयमाण:	श्रोतुम्
स्था	ठहरना	स्थित्वा	प्रस्थाय	स्थित:	स्थितवान्	तिष्ठन्	स्थीयमान:	स्थातुम्
दा	देना	दत्वा	आदाय	दत्त:	दत्तवान्	ददत्	दीयमान:	दातुम्
ग्रह	लेना	गृहीत्वा	संगृह्य	गृहीत:	गृहीतवान्	गृह्णन्	गृह्यमाण:	गृहीतुम्
मुच्	छोड़ना	मुक्त्वा	अवमुच्य	मुक्त:	मुक्तवान्	मुञ्चन्	मोच्यमान:	मोक्तुम्
भुज्	खाना	भुक्त्वा	उपभुज्य	भुक्त:	भुक्तवान्	भुञ्जन्	भुञ्जान:	भोक्तुम्
दृश्	देखना	दृष्ट्वा	संदृश्य	दृष्ट:	दृष्टवान्	पश्यन्	दृश्यमाण:	द्रष्टुम्
कुप्	क्रोध करना	कोपित्वा	प्रकुप्य	कुपित:	कुपितवान्	कुप्यन्	–	कोपितुम्
प्रच्छ्	पूछना	पृष्ट्वा	आपृच्छ्य	पृष्ट:	पृष्टवान्	पृच्छन्	–	प्रष्टुम्
लभ्	पाना	लब्ध्वा	उपलभ्य	लब्ध:	लब्धवान्	–	लभमान:	लब्धुम्

2. तद्धित प्रत्यय

तद्धित प्रत्यय के कई भेद हैं। यह प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया और विशेषण में लगाये जाते हैं।

(अ) मतुप् प्रत्यय—इसके प्रयोग से 'वाला' आदि सूचक शब्द बनते हैं। इसका रूप केवल 'मत्' रह जाता है। प्रत्ययान्त

शब्द विशेषण होते हैं, इसलिए विशेष्य के अनुसार लिङ्ग, वचन और विभक्ति के अनुसार रूप होते हैं। **यथा–**

गो + मतुप् = गोमत् (गौ वाला)
मति + मतुप् = मतिमत् (बुद्धि वाला)
श्री + मतुप् = श्रीमत् (श्रीमान्) **(2020MO)**
धी + मतुप् = धीमत् (बुद्धिमान्)
आयुः + मतुप् = आयुष्मत् (दीर्घायु)

मतुप् (मत्) का 'म' बदलकर व हो जाता है, यदि जिस शब्द में उसे लगाते हों, वह निम्नांकित कोटि का हो–

(1) अकारान्त या आकारान्त हो। **यथा–**बल + मतुप् = बलवत् ; विद्या + मतुप्= विद्यावत्।

(2) मकारान्त हो। **यथा–**किम् + मतुप् = किंवत्।

(3) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम स्वर के पहले म् हो। **यथा–** लक्ष्मी + मतुप्= लक्ष्मीवत्।

(4) जिस शब्द के अन्त में वर्गों के प्रथम चार वर्णों में कोई हो। **यथा–**विद्युत्+ मतुप् = विद्युत्वत्; सुहृद् + मतुप् = सुहृदवत्।

(5) ऐसा शब्द, जिसके अन्तिम व्यञ्जन के पहले अ या आ हो। **यथा–**यशस्+ मतुप् = यशस्वत्; भास् + मतुप् = भास्वत्।

मतुप् प्रत्यय के योग से बने कुछ शब्द-रूप

शब्द	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
धन	धनवान्	धनवती	धनवत्
रूप	रूपवान्	रूपवती	रूपवत्
बल	बलवान् **(2020MU)**	बलवती	बलवत्
गुण	गुणवान्	गुणवती	गुणवत्
रस	रसवान्	रसवती	रसवत्
धी	धीमान्	धीमती	धीमत्

(आ) इनि प्रत्यय–अकारान्त शब्दों के पश्चात् 'इनि' (इन्) 'वान्' 'वाला' आदि के अर्थों में यह प्रयुक्त होता है। **जैसे–**

चक्र + इन् = चक्रिन्, दण्ड् + इनि = दण्डिन् (दण्डी)।
धन + इनि = धनिन् शिखा + इनि = शिखिन्।
बल + इनि = बलिन्, सुख + इनि = सुखिन्।
दुःख + इनि = दुःखिन्, कर्म + इनि = कर्मिन्।
गुण + इनि = गुणिन्, प्रणय + इनि = प्रणयिन्।
कर + इनि = करिन्, माला + इनि = मालिन्।
हस्त + इनि = हस्तिन्, दोष + इनि = दोषिन्।

(इ) त्व और तल् प्रत्यय–किसी शब्द को भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए उस शब्द में 'त्व' अथवा 'तल्' (ता) जोड़ देते हैं। 'त्व' से अन्त होने वाले शब्द सदा नपुंसकलिङ्ग में होते हैं और तल् से अन्त होने वाले स्त्रीलिङ्ग में।

शब्द	त्व	तल्
कुशल	कुशलत्वम्	कुशलता
गुरु	गुरुत्वम्	गुरुता
मित्र	मित्रत्वम्	मित्रता
देव	देवत्वम्	देवता
सुन्दर	सुन्दरत्वम्	सुन्दरता
मनुष्य	मनुष्यत्वम्	मनुष्यता

(ई) ठक् प्रत्यय–ठक् प्रत्यय का प्रयोग भाववाचक संज्ञा बनाने के लिए होता है। शब्द के साथ जुड़ने पर ठक् का इक हो जाता है। शब्द के प्रथम स्वर में वृद्धि हो जाती है। **जैसे–** अ का आ, इ का ऐ, उ का औ हो जाता है।

शब्द	**+**	**ठक् (इक)**	**प्रत्ययान्त रूप**
धर्म	+	ठक् (इक)	धार्मिक
अस्ति	+	ठक् (इक)	आस्तिक
अश्व	+	ठक् (इक)	आश्विक
सप्ताह	+	ठक् (इक)	साप्ताहिक
संस्कृति	+	ठक् (इक)	सांस्कृतिक
साहित्य	+	ठक् (इक)	साहित्यिक
लोक	+	ठक् (इक)	लौकिक
दिन	+	ठक् (इक)	दैनिक

(उ) टाप् प्रत्यय–टाप् प्रत्यय के ट् और प् का लोप होकर केवल 'आ' शेष रह जाता है। वह 'आ' अकारान्त पुंलिङ्ग शब्दों में जोड़ा जाता है। **यथा–**

चटक + आ = चटका
अज + आ = अजा
प्रथम + आ = प्रथमा
सुत + आ = सुता
शूद्र + आ = शूद्रा
कनिष्ठ + आ = कनिष्ठा

अभ्यास प्रश्न

1. प्रत्यय किसे कहते हैं?

2. निम्नलिखित शब्दों में क्त प्रत्यय जोड़कर प्रत्ययान्त शब्द बनाइए–
जि, मिल्, चिन्त्, हस्, लिख्।

3. निम्नलिखित 'क्तवतु' प्रत्ययान्त शब्दों का वाक्य-प्रयोग कीजिए–
श्रुतवान्, गतवान्, सुप्तवान्, कृतवती, पठितवान्

4. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं दो पदों में प्रयुक्त प्रत्ययों के नाम लिखिए–
एधनीयम्, वक्तुम्, गच्छन्, विभूति।

(ख) 'धाव्' धातु से क्त्वा प्रत्यय लगने पर क्या रूप बनता है?
(1) धाव्त्या, (2) धावित्वा (3) धावयित्वा (4) धात्वा।

(ग) 'आपत्ति' में कौन-सा प्रत्यय है?
(1) क्त्वा (2) क्तिन् (3) क्तः (4) क्तवतु।

5. (क) 'आनीतः' में कौन-सा प्रत्यय है? सही विकल्प चुनकर लिखिए–
(1) क्त (2) क्त्वा (3) क्तवतु (4) यत्।

(ख) 'भक्ष्' धातु में क्त प्रत्यय लगाकर क्या रूप बनता है?
(1) भक्षतः (2) भक्षितः (3) भक्षत (4) भक्षीतः

(ग) सृष्टि में कौन-सा प्रत्यय है?
(1) क्त (2) क्तिन् (3) शतृ (4) क्त्वा।

(घ) 'पिबन्' में कौन-सा प्रत्यय है?
(1) शानच् (2) शतृ (3) क्त्रिन् (4) तुमुन्।

(ङ) 'पच्' धातु में 'शतृ' प्रत्यय लगाकर क्या रूप बनेगा?
(1) पचतः (2) पचन् (3) पक्वः (4) पचनीय।

(च) 'खादितुम्' में कौन-सा प्रत्यय है?
(1) शतृ (2) क्तः (3) तुमुन् (4) क्तिन्।

6. निम्नलिखित में प्रयुक्त धातु एवं प्रत्ययों के नाम लिखिए–

(क) पातुम्, श्रुत्वा, क्रीडितवान्, कथनीयः।
(ख) कथितः, हत्वा, चलितुम्, दैनिकः।
(ग) आनीय, गत्वा, कर्त्तुम्, गतः।
(घ) नष्टः, गतवान्, कुर्वन्, वक्तुम्।
(ङ) गत्वा, भूतवती, कम्पितः, कृतिः।
(च) पीत्वा, भवितुम्, खादन्, पानीयम्।
(छ) भूतः, स्थातुम्, निहत्य, पठन्।
(ज) लब्धः, पीत्वा, कृतवान्।
(झ) श्रीमत्, पठनीय, अधीत्य, नर्तितुम्।
(ञ) आदाय, भुक्तः, पठितवती।
(ट) पठितः, गत्वा, पठनीयम्, पातुम्।
(ठ) भोक्तुम्, कृत्वा, उदितः, पूजनीयः।
(ड) श्रीमान्, गातुं, निन्दनीय, विहाय।
(ढ) कथितवान, घ्रात्वा, याचनीयम्, सेवमानः।
(ण) गतवान, भोक्तुम्, पठनीयम्, पीत्वा।
(त) याचितः, कर्त्तुम, गतवान, कृतिः।
(थ) भक्ति, विज्ञाय, कर्त्तुम्, गतवान्।
(द) गत्वा, पठन, सहमानः, दर्शनीयम्।
(ध) श्रुतवान्, दानीयम्, स्तुतिः, द्रष्टुम्, पठितुम्।
(न) कथितः, स्तुतिः, पीत्वा, विज्ञाय।
(प) चलितः, चलनीयम्, नीतिमान, महत्त्व।
(फ) सम्मान्यः, प्राप्तम्, गच्छत्, लभमानः।
(ब) भूत्वा, पातुम्, भवन्।
(भ) कृत्वा, पठन्, याचमानः, दानम्।
(म) पातुम्, गमनीयः, श्रुत्वा, श्रीमत्।
(य) उत्थाय, ज्ञातवान्, देवत्वम्, हसितुम्।
(र) आगत्य, दृष्ट्वा, पठितुम्।
(ल) लब्धवान्, चलन्, भुक्त्वा।
(व) गन्तुम्, आदाय, गतः।
(श) कृतः, गतवान्, दृष्ट्वा, अवतीर्य।
(ष) खातः, प्रणम्य, शिवा।
(स) पठित्वा, स्मरन्ती, हन्तव्यः।
(ह) पठितुम्, नत्वा, गतः।
(क्ष) ज्ञातवान्, कुर्वाणः, गुरुता।
(त्र) भूत्वा, गन्तुम्, पठनीयम्।